११३. मानव ही सुखी होकर व्यवस्था में जीता है

१३-१०-१३

मानव सुखी होना विकसित चेतना विधि से ही होता है | विकसित चेतना अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित हो पाता है | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाण है | यही जागृत चेतना का प्रमाण है | जागृत चेतना ही मानव चेतना रूप में प्रमाण है | जागृत चेतना अभी तक मानव परम्परा में आया नहीं | विकल्प रूप में प्रस्ताव है | प्रस्ताव रूप में प्रस्तुत विकल्प अपने में अनुभवमूलक विधि से ही जागृतपूर्ण चेतना का प्रमाण है | यही दिव्य चेतना सम्मत ज्ञान है | अनुभव समझदारी का फलन है | समझदारी अध्ययन से होता है | अध्ययन शब्दों के अर्थ में समाई है | दूसरा विधि से विकल्पात्मक प्रस्ताव के शब्दों में समाई है | इस क्रम में विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना है | यह क्रम से यथार्थ के बोध, बोध पूर्णता एवं अनुभव से आता है | यही अर्ध जागृत, जागृत एवं पूर्ण जागृति के स्थितियों के रूप में समझ आता है | जीवन ही जागृत होता है | मानव चेतना, जीव चेतना से श्रेष्ठ एवं जागृत है | देव चेतना, मानव चेतना से श्रेष्ठ एवं जागृत है | दिव्य चेतना, देव चेतना से श्रेष्ठ एवं जागृतपूर्ण है |

अनुभव में तीनों चेतना का ज्ञान समाया रहता है | जागृत चेतना का अनुभव, प्रमाण परम्परा में होना सम्भावित है | इसीलिये प्रस्ताव रखा है | प्रमाण के बिना परम्परा होता नहीं | अभी तक मानव परम्परा अर्थात प्रचलन विधि से परम्परा, दूसरा विधि से आहार, निद्रा, भय, मैथुन विधि से परम्परा; यही जीव चेतना का आधार है | जीव चेतना विधि से मानव परम्परा बनता नहीं | अभी भय एक समुदाय से दूसरा समुदाय के साथ बना ही है | इसी क्रम में हर समुदाय सामरिक तंत्र में व्यस्त होना बना है | सामरिक तन्त्र मनुष्य की परम्परा में ही है | जबकि ये सामरिक अर्हता में विकास अथवा गुणात्मक परिवर्तन अथवा विनाशात्मक परिवर्तन इस विधि से हुई | जंगल में रहते जीवों से जूझते रहा, जीवों से जूझने के क्रम में बन्दूक और बारूद की बात आयी | यही बंदूक, बारूद जीवों के प्रति आश्वस्त होने के उपरांत मानव के साथ अनेक नस्ल, रंग के रूप में देखने को मिलने वाले मानव भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार नस्ल, रंग प्राप्त किया | इस क्रम में चलता रहा मानव |

जीवों के साथ संघर्ष कम होने के बाद मानव के साथ संघर्ष शुरू हुआ | मानव के साथ संघर्ष ही युद्ध के रूप में प्रमाणित हुआ | युद्ध विधि से जितने भी नभिकीय प्रयोग हुआ उसके आधार पर धरती बीमार हो गयी | नाभिकीय प्रयोग ही धरती को बीमार करने में समर्थ है | नाभिकीयता का सुरक्षा होना ही मानव का सुरक्षा है | इस विधि से मनुष्येतर तीनों अवस्थाएं नियंत्रित होना आवश्यक है या आवश्यकता आ गयी | इसका उपाय केवल चेतना विकास ही है | चेतना विकास विधि से ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ये तीनों प्रमाणित होते हैं; जिसमें से देव चेतना विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन का अध्ययन एवं ज्ञान है | इस क्रम में अर्थात विकल्पात्मक क्रम में मानव ही अन्य तीनों अवस्थाओं में नियंत्रण कर पाता है जिसमें से जीव जातियों में क्रूर जीवों का नियंत्रण आवश्यक है, उसको पाता है |

इसे पाने से मानव जीव संसार से निर्भय होकर काम कर सकता है | मानव के साथ निर्भयता के साथ काम करने से अखण्डता, सार्वभौमता सफल होना सम्भव है | इस क्रम में मानव ही ज्ञानावस्था में होना प्रधान बात है | ज्ञानावस्था में होने के आधार पर ही अन्य तीनों अवस्थाओं में नियम, नियंत्रण, संतुलन सार्थक होना पाया जाता है | संतुलन का अंतिम स्वरूप प्रकृति में संतुलन, चारों अवस्था में संतुलन, मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने का अध्ययन सुलभ होने से होता है | अध्ययन सुलभ

होने से प्रकृति का नियंत्रण हो पाता है | दूसरा भाषा में विकल्पात्मक अध्ययन सुलभ होने से चारों अवस्था में संतुलन सम्भव है | अध्ययन और पठन में अंतर है | पठन भाषा का होता है | काम तकनीकी का होता है | समझदारी जीने का होता है | जीने का मतलब प्रमाणित होने से है | प्रमाणित होने का मतलब सोचने से ही जागृति समझ में आती है | चेतना विकास ही जागृति है | जागृतिपूर्वक ही मानव अखण्डता, सार्वभौमता, स्वतन्त्रतावादी घटनाओं से सम्पन्न हो पाता है | दूसरा कोई विधि नहीं है अभी तक | आगे अखण्डता, सार्वभौमता सर्वसुलभ होने के उपरान्त ही आगे सोचने की बात आती है | इसके पहले विकल्प के विपरीत यदि कोई परिस्थिति निर्मित करता है, वह जीव चेतना के समान ही है | पैसे के लिये परिवर्तन सोचने पर जीव चेतना ही होता है | जीवों से अच्छा जीने के लिये होता है |

जीवों से अच्छा जीने मात्र से जागृत हो गया, ऐसा कुछ नहीं है | जीव चेतना ही रहता है | तरीका जीवों से अच्छा हो जाता है | जीव संसार भी शाकाहारी है, मांसाहारी है | मानव जात भी शाकाहारी है, माँसाहारी है | इस क्रम में मानव को जीव कहना बना है | जीव कहने मात्र से परिस्थितियां बदलता नहीं अथवा जागृति हाथ लगता नहीं | विकल्प विधि से ही जागृति हाथ लगता है | जागृतिपूर्वक ही मानव, मानवत्व सहित जीना बनता है | मानवत्व ही चेतना विकास का प्रमाण है | यही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना रूप में व्यवहृत होता है | दिव्य चेतना अनुभव प्रधान है | अनुभव सम्मत विचार विधि से देव चेतना प्रमाण होता है | अनुभव विचार सम्मत विधि से व्यवहार होता है, न्याय होता है, यह मानव चेतना है | न्याय, मानव चेतना विधि से, देव चेतना विधि से समाधान, अनुभव सम्मत विधि से सह-अस्तित्व प्रमाण हो जाता है | इस ढंग से अध्ययन विधि से ज्ञान एवं आचरण, अनुभव मूलक विधि से प्रमाण को समझा जा सकता है | इसको भले प्रकार से जाँचा है | इसको जांचने पर पता चला, मानव निरंतर सुखी होने के लिये विकसित चेतना ही एकमात्र आधार है | इस वर्तमान तक अर्थात सन २००० तक मानव जात न्यायालयों को तैयार किया | न्यायालय में न्याय नहीं है |

इसको इस प्रकार से जांचा है; धरती पर एक सौ से अधिक संविधान बना है अर्थात देश बना है, समुदाय बना है, इन्हें राष्ट्र भी कहते हैं | इस क्रम में १०० से अधिक संविधान लिखने के उपरांत भी न्याय का अता-पता नहीं है | अभी तक न्यायालयों में न्याय का अभाव है | विकल्प से ही यह पूरा हो पाता है | कार्य व्यवहार विचार सम्मत, विचार अनुभव सम्मत, अनुभव सह-अस्तित्व सम्मत होने के आधार पर जो कुछ भी कार्य व्यवहार होता है, उसमें न्याय चेतना सफल हो जाता है | कार्य मनुष्येतर प्रकृति के साथ है, उत्पादन के अर्थ में | व्यवहार मनुष्य के साथ है न्याय के अर्थ में | न्यायपूर्वक मानव जी पाना ही अखण्डता का आधार है | मानव ही अखण्डता का अनुभव कर सकता है | और तीनों प्रकृति में ये आधार नहीं है | मनुष्य सर्वदेशकाल में सुखी होना चाहता है | इसका स्वरूप ही अखण्डता, सार्वभौमता है | अखण्डता में नित्य उत्सव है |

मानव जात ही अखण्ड समाज को पाता है | मानव में ज्ञान का प्रकाश होना, दूसरा भाषा से मानव परम्परा में ही अखण्डता का प्रमाण होना सम्भव है | ज्ञान विधि से ही यह सम्भव है | समुदाय विधि से यह सम्भव नहीं है | इतने लम्बे समय से अर्थात मानव जब से धरती पर अवतरित हुआ तब से अभी तक अर्थात २०वीं शताब्दी तक मानव अखण्डता को नहीं प्राप्त किया | समुदाय को प्राप्त किया है | हर व्यक्ति अभी तक व्यक्तिवाद और समुदाय तक ही सोच पाता है, जी पाता है, कर पाता है | इस आधार पर व्यक्तिवाद, समुदायवाद ही हुआ | व्यक्तिवाद, समुदायवाद अखण्डता से दूर है |

अखण्डता की अपेक्षा मानव में है | समुदाय में अखण्डता का अपेक्षा करता है | हर एक संविधान अपने को अखण्ड और सार्वभौम कहता है | जितना समुदाय है सभी अखण्ड और सार्वभौम है, ऐसा कहा जाता है | ये कहने मात्र से कुछ

सार्थकता नहीं हुआ, बल्कि संघर्ष, युद्ध में ही सिद्ध हुआ | संघर्ष, युद्ध दोनों अखण्डता, सार्वभौमता के विपरीत है | यह कार्य रूप में सर्वोपरि मानकर के हर समुदाय अपना संविधान बनाया है जिसके लिये सर्वाधिक सुविधा प्रस्तुत करने के लिये कोशश करता है | इसी बीच शासन कहलाता है | शासन को निर्वाह करने वाले सर्वाधिक लोगों में सर्वाधिक सुविधा होने की कल्पना है | इस ढंग से राजनैतिक विधा में सर्वाधिक सुविधा जोड़ना बना | इसके लिये परम्परा में पाये जाने वाले आर्थिक विधि से किसी एक हद तक होने के बाद सरकार के लिये अथवा शासन के लिये कुछ अंश को देना पड़ता है | जिसको स्वेच्छा से भी होता है, बलात्कार से भी होता है | इन दोनों विधि से पाया हुआ धन को राज पुरुषों के साथ व्यय करना सर्व प्राथमिकता बना है | इसको भले प्रकार से देखा जा सकता है, हर व्यक्ति समझ सकता है | इस क्रम में अर्थात इस कार्यक्रम में बल ही प्रधान है | शासन को सर्वोपरि बलशाली माना जाता है, व्यक्ति को नहीं माना जाता |

जब तक तलवार से युद्ध होता रहा, तब तक भुजबल माना जाता है | जब से तलवार का युद्ध समाप्त होगया; बंदूक का युद्ध आ गया, बारूद का युद्ध आ गया, मिसाइल का युद्ध आ गया | इसमें बाहुबल का कोई अर्थ नहीं रहा | तकनीकी का अर्थ रहा | तकनीकी को अपंग लोग भी प्रयोग कर सकते हैं | तलवार, युद्ध तक पुरुष प्रधान रहा | उसके बाद ही बंदूक, बारूद, मिसाइल युग आने के बाद नर नारियों में समानता की कल्पना हुई | इस कल्पना के अनुसार मानव जात अभी तक नर-नारी में समानता का बिंदु को पहचाना नहीं | अभी तक पैसा दोनों जात के पास होने से समानता मानता है | विकल्प विधि से समझदारी होने से समानता होता है | समझदारी शिक्षा विधि से सबको पहुँचता है | पैसे की समानता सब में हुआ नहीं | चाहते हैं सब समानता | समझदारी में ही नर-नारी में समानता है | कार्य-व्यवहार में समानता है, व्यवस्था में समानता है | कार्य-व्यवहार में समानता का होना सम्भावित है | इस क्रम में मानवत्व का आवश्यकता बन जाता है |

मानवत्व के रूप में चेतना है | विकसित चेतना ही जागृत चेतना है | इस विधि से मानव अपने में मानवत्व का स्वत्व सम्पन्नता का अनुभव कर सकता है | विकसित चेतना विधि से ही मानवत्व सम्पन्न होना बनता है | तकनीकी विधि से हुआ नहीं अथवा आदर्शवादी विधि से, रहस्यवाद से हुआ नहीं | आदर्शवादी विधि से ही रहस्य बना हुआ है | रहस्यवश ही आदर्शवाद शिक्षा में प्रचलित नहीं हो पाया | तकनीकी विधि से शिक्षा प्रचलित हो गयी | अब नर-नारी में समानता के आधार में नौकरी ही एकमात्र रास्ता हुई | नौकरी करता हुआ मानव प्रेरक से अधिक कुछ बन नहीं सकता | विकल्प विधि से इसे देख लिया गया है | जब तक मानव समाधान, समृद्धि सम्पन्न नहीं होगा तब तक जीने का अर्थ होता नहीं | अर्थात समझदारी से जीने का अर्थ बनता है | समझदारी से जीना विकल्प विधि से ही है | विकल्प विधि से ही अखण्डता, सार्वभौमता होता है, दूसरा विधि से होता नहीं | अभी तक हर समुदाय को अखण्ड, सार्वभौम कहा जाता है किन्तु रहता नहीं |

अखण्ड, सार्वभौम होने के आधार पर ही समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व सुलभ होना होता है | धर्म रूप में समाधान होता है; क्योंकि समाधान बराबर सुख, समस्या बराबर दुःख होना देखा गया है | इस क्रम में समाधान=सुख=मानव धर्म कहा गया है विकल्प में | विकल्प विधि से ही समझदारी समझ में आता है | समझदारी का स्वरूप चेतना विकास ही है | विकसित चेतना ही मानवत्व है | मानवत्व ही मानव, देव मानव, दिव्य मानव के रूप में आचरण में प्रमाणित होता है | इस प्रमाण के आधार पर अखण्डता, सार्वभौमता दोनों प्रमाणित होता है | सामाजिक अखण्डता, व्यवस्था में सार्वभौमता होता है | अखण्डता में ही नित्य उत्सव रूप में मानव परम्परा का होना देखा जा सकता है |

सार्वभौमता रूप में नियम, नियंत्रण, संतुलन रूप में मनुष्येतर प्रकृति को देखा जा सकता है | न्याय, धर्म, सत्य के रूप में मानव परम्परा का होना देखा जा सकता है | यही मुख्य बात है | इसी विधि से मानव, मानवत्व को प्रमाणित कर पाता है | प्रमाण केवल आचरण के रूप में होता है | भाषा के रूप में प्रमाण नहीं होता है | अभी तक जबरदस्ती यही है कि भाषा ही प्रमाण है | आदर्शवाद, भाषा को परम कहा | इस क्रम में मानव कुछ नहीं पाया अर्थात इन दोनों क्रम में मानवत्व का प्राप्ति नहीं हो पाया | इसीलिये विकल्प की आवश्यकता आई | आवश्यकता विधि आने से विकल्प प्रस्तुत हुआ | विकल्प के आधार पर जीने से मानव, मानवत्व रूपी स्वत्व को प्रयोग कर सकता है |

यह हर देश कालीय मानव के अधिकार की बात है | इसी विधि से अखण्डता समझ में आता है | अखण्डता सार्थक होने के पश्चात ही अखण्ड समाज व्यवस्था की बारी आती है | अखण्ड समाज व्यवस्था होने के क्रम में चारों अवस्था के साथ व्यवस्था होता है | यही सार्वभौम व्यवस्था कहलाता है; जिससे मानव सुखी होना ही मुख्य बात है | इसी के लिये मानव प्रयत्न करता रहा है | अर्थात सुखी होने के लिये मानव हर तरीके से प्रयत्न किया | इसी क्रम में विकल्प प्रस्तुत हुआ |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)